बेहद का वैराग्य - 10

अव्यक्त बापदादा :- (31. 03. 1990)

➽ _ ➽ स्व-उन्नति के लिए स्व पर जब रहमदिल बनते हैं तो रहमदिल आत्मा को सदा बेहद की वैराग्यवृत्ति स्वतः ही आती है। **स्व के प्रति भी रहम हो कि मैं कितनी ऊंच-ते-ऊंच बाप की वही आत्मा हूँ और वही बाप समान बनने के लक्ष्यधारी हैं।** उस प्रमाण ओरिजनल श्रेष्ठ स्वभाव वा संस्कार में अगर कोई कमी है तो अपने ऊपर दिल का रहम, कमियों से वैराग्य दिला देगा।

➢➢ रहमदिल

➽ _ ➽ आत्मा की उन्नति के लिए जब खुद, खुद के लिए रहमदिल बनेंगे तब आत्मा को स्वतः ही बेहद की वैराग्यवृत्ति आती है

→ आत्मा को स्मृति में रहना चाहिए की मैं वही आत्मा हूँ जो सृष्टि के सर्वोच्च हैं.. गुणों के सागर हैं..

■ और बाप समान बनने के लक्ष्यधारी हैं, बाप के गुणों और शक्तियों को धारण करना है

➽ _ ➽ हमारे ओरिजिनल अनादि, दैवीय स्वभाव संस्कारों को धारण करना है

→ क्या मैं शांत स्वरुप आत्मा हूँ..

→ क्या मैं प्रेम स्वरुप आत्मा हूँ..

■ मुझमें कोई घृणा, नफरत किसी के लिए तो नहीं है?

▶ अगर कोई कमी है तो खुद के ऊपर रहम आना चाहिए

▶ कमियों को मिटा देना चाहिए..

अव्यक्त बापदादा :- (13. 12. 1990)

➽ _ ➽ **तपस्या का सदा और सहज फाउन्डेशन है - 'बेहद का वैराग्य'। बेहद का वैराग्य अर्थात् चारों ओर के किनारे छोड़ देना। क्योंकि किनारे को सहारा बना दिया है।** समय प्रमाण प्यारे बने और समय प्रमाण श्रीमत पर निमित्त बनी हुई आत्माओं के इशारे प्रमाण सेकेण्ड में बुद्धि प्यारे से फिर न्यारी बन जाये, वह नहीं होती। जितना जल्दी प्यारे बनते हो, उतने न्यारे नहीं बनते हो। प्यारे बनने में होशियार है, न्यारे बनने में सोचते हैं, हिम्मत चाहिए। **न्यारा बनना ही किनारा छोड़ना है और किनारा छोड़ना ही बेहद की वैराग्य वृत्ति है।** किनारों को सहारा बनाए पकड़ना आता है लेकिन छोड़ने में क्या करते हो? लम्बा क्वेश्चन मार्क लगा देते हो। सेवा का इन्चार्ज बनना बहुत अच्छा आता है लेकिन इन्चार्ज के साथ-साथ स्वयं की और औरों की बैटरी चार्ज करने में मुश्किल लगता है। **इसलिए वर्तमान समय तपस्या द्वारा वैराग्य वृत्ति की अति आवश्यकता है।**

➽ _ ➽ बहुत-बहुत भाग्यवान हो। अनेक प्रकार की मेहनत से छूट गये। दुनिया वालों को समय करायेगा और समय पर मजबूरी से करेंगे। बच्चों को बाप समय के पहले तैयार करते हैं और बाप की मोहब्बत से करते हो। अगर मोहब्बत से नहीं किया वा थोड़ा किया तो क्या होगा? मजबूरी से करना ही पड़ेगा। **बेहद का वैराग्य धारण करना ही होगा लेकिन मजबूरी से करने का फल नहीं मिलता। मोहब्बत का प्रत्यक्षफल भविष्य फल बनता है और मजबूरी वालों को कहाँ से क्रॉस करना पड़ेगा!** क्रॉस करना भी क्रॉस में चढ़ने के समान है। तो क्या पसन्द है?

➢➢ तपस्या का फाउन्डेशन है - ‘बेहद का वैराग्य’

➽ _ ➽ **बाबा हमको तपस्या कुमार, तपस्या कुमारी बनाने के लिए आया है, पतित से पावन बनाने के लिए आया है**

→ इसके लिए पहला फाउंडेशन है पवित्रता..

→ दुनिया से वैराग वृत्ति चाहिए

■ दुनिया से अटैचमेंट रहेगा तो तपस्या कुमार, तपस्या कुमारी कभी नहीं बन सकते

➽ _ ➽ पुरानी दुनिया के देह, देह के सम्बन्ध इन सबसे किनारा छोड़ना है..

→ कोई किसी समय हमें मदद किए तो उसी को बार-बार याद करते हैं की वही हमारा असली सहारा है, ये हमारी भूल है

■ जितना जल्दी प्यारे बनते हैं उतने न्यारे नहीं बनते हैं

▶ **समय प्रमाण किसी ने मदद दिया पर उसे भेजा बाबा ने ही, हम बाबा को भूल जाते हैं**

▶ उस आत्मा से न्यारे नहीं बनते, ये सोचकर की हमें कौन सहारा देगा, बाबा का तो शरीर ही नहीं है

→ **न्यारा बनना ही किनारा छोड़ना है और किनारा छोड़ना ही बेहद की वैराग्य वृत्ति है**

■ दृढ संकल्प लेना है की छोड़ना ही है

→ सेवा का इन्चार्ज बनना बहुत अच्छा आता है लेकिन इन्चार्ज के साथ-साथ स्वयं की और औरों की बाबा के साथ बुद्धि लगाने में मुश्किल लगता है

■ **अभी अंतिम समय आ गया है, संकल्पों में भी किसी के साथ लगाव ना हो, तभी बेहद की वैराग्य वृत्ति आ सकती है**

➽ _ ➽ हम बहुत ही भाग्यवान हैं, बाबा ने हमें भक्ति मार्ग के कई रस्म-रिवाज से, मेहनत से छुड़ा दिया..

→ दुनिया वालों को मजबूरी में वैराग्य वृत्ति करना पड़ेगा..

■ **हम बाप के प्यार से सबकुछ छोड़ दिए, मजबूरी से नहीं**

■ अगर कोई मोहब्बत से नहीं किए मजबूरी से थोडा किया तो इसका फल क्या होगा? मजबूरी से करना ही पड़ेगा

■ अब तो घर जाना ही पड़ेगा तो क्यों ना बाबा की श्रीमत के अनुसार करें

■ हमको बेहद का वैराग्य वृत्ति धारण करना ही पड़ेगा नहीं तो अंत समय बहुत सजा खाना पड़ेगा

■ मोहब्बत से सबकुछ छोड़ देंगे तो भविष्य का प्रत्यक्षफल मिलेगा

▶ मजबूरी से करेंगे तो क्रॉस के ऊपर चढ़ना पड़ेगा

▶ मोहब्बत से चढ़ना पसंद करेंगे की मजबूरी से?

➢➢ वैराग्य शतकम श्लोक - 56

➽ _ ➽ यह चंडाल है, यह ब्राह्मण है, यह शूद्र है, यह तपस्वी है, क्या यह तत्व भी योगेश्वर है, लोगों द्वारा ऐसे अनेक प्रकार के संशय और तर्क युक्त बातें सुनकर भी योगी लोग ना नाराज होते हैं, ना खुश होते हैं.. वे तो साधारण चित्त से अपनी राह चले जाते हैं..

→ योगी लोगों की बुरी-भली बातों का ख्याल नहीं करते.. कोई कुछ भी क्यों ना कह रहे हैं, चाहे उन्हें कोई शूद्र कहे, चाहे उन्हें कोई ब्राह्मण कहे, चाहे ढोंगी या तपस्वी कहें, कोई निंदा करे चाहे स्तुति करे, वे अच्छी बात से प्रसन्न और बुरी बात से अप्रसन्न नहीं होते..

→ **सच्चे महात्मा, हर्ष-शोक, सुख-दुःख, मान-अपमान, सबको समान समझते हैं.. निंदा-स्तुति, जय-पराजय, हानि-लाभ, सर्दी-गर्मी, सबमें समान.. ये योगी की अवस्था है..**

■ **जिसको स्तुति में बहुत आनंद आता है, निंदा हो गई तो दुखी हो जाएगा.. जिसका स्तुति के आधार पर खुशी है तो वो दुःख में परिवर्तित हो जाएगी एक दिन..**

▶ ज्ञानी आत्मा ना ही स्तुति से हर्षित होता है ना ही निंदा से प्रभावित होता है.. ये अवस्था चाहिए..

▶ कोई निंदा करे या स्तुति करे, हमारी ख़ुशी इन सब पर निर्भर ना रहे

▶ हम ड्रामा पर अचल-अडोल रहे, ड्रामा हमारी ढाल है

▶ ड्रामा में हर एक का पार्ट अपना-अपना है, भाग्य अपना-अपना है, जो कुछ हो रहा है वो सत्य है, परन्तु हम उससे अप्रभावित रहें

→ योगेश्वर कृष्ण ने गीता के दूसरे अध्याय में कहा है जो दुःख के समय दुखी नहीं होता है, जो राग, भय और क्रोध से रहित है वह स्थितप्रज्ञ मुनि है..

■ जो कभी दुखी नहीं होता, जिसमें कभी राग, मोह नहीं होता

■ **मोह की तुलना अंधकार से की गई है, अंधकार जो है रात्रि में शरीर के आसपास होता है.. मोह वह अंधकार है जो आत्मा के चेतना के आसपास है..**

▶ **मोह को अध्यात्मिक अंधत्व कहा जाता है, Spiritual Blindness**

▶ जो व्यक्ति मोह से ग्रसित है उसे कुछ दिखाई नहीं पड़ता है, ठोकर खाता है

▶ **मेरे को मेरे बाबा में परिवर्तन करना है, इसके लिए साधना चाहिए..**

▶ **रोज चेकिंग करना है.. इसके लिए रोज की डायरी लिखना, दिनचर्या लिखना**

▶ **संसार की जितने भी महान आत्माएं थी उनको डायरी लिखने की आदत थी..**

▶ दिनचर्या लिखते-लिखते उसीमें चार्ट include कर देना है, जैसे कितने बजे उठे, क्लास में गए, क्लास में किस बात पर चर्चा हुई, किस-किस से मिले, दिनभर में कोई महत्वपूर्ण घटना हुई.. कोई गलती की, नींद आई योग में, मंडे तो सैटरडे लिखना और फिर सन्डे को डायरी चेक करना.. फिर अपने आप को साक्षी होकर देखना की क्या-क्या संकल्प चले थे.. अपने गुणों-अवगुणों को साक्षी होकर देखना..

▶ इससे पता चलता है की अहंकार कहाँ-कहाँ आता है.. इससे हम स्वयं को जानेंगे.. लिखने से हमारे विचार स्पष्ट होंगे, कोई-कोई बातें याद रहेंगे.. लिखने की कला भी विकसित होगी..

→ **तो बुद्धिमान को किसी भी बात की परवाह नहीं करनी चाहिए, हाथी की तरह रहना चाहिए.. हाथी के पीछे हजारों कुत्ते भौंकते हैं.. पर वह उनकी तरफ देखता भी नहीं.. इतना मस्त रहता है..**

→ महाकवि रहीम कहते हैं- 'बड़ों को छोटा कहने से बड़े छोटे नहीं हो जाते, गिरिराज या गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी ऊँगली पर उठाने वाले अतुल पराक्रम दिखाने वाले श्रीकृष्ण को लोग गिरिधर की जगह मुरली या बांस की बांसुरी धारण करने वाले मुरलीधर कहते हैं लेकिन वे बुरा नहीं मानते'

→ तो सज्जन लोग दुष्टों की कडवी बातें या बोलियों का ख्याल ही नहीं करते, लोग आम के वृक्ष को पत्थर मारते हैं, तो भी वह फल ही देता है..

➳ _ ➳ **स्थितप्रज्ञ योगी अर्थात किसी भी बात से प्रभावित ना होना, निर्लेप अवस्था को प्राप्त करना.. बाबा ने कहा- समाने की शक्ति स्वरुप का सागर बनो..**

→ स्वमान- मैं स्थितप्रज्ञ योगी हूँ..

→ **अचल-अडोल योगी हूँ..**

→ निर्लेप योगी हूँ..

→ अप्रभावित योगी हूँ..

→ **संसार की कोई भी परिस्थिति, विघ्न, कोई कमेंट्स, कटाक्ष, व्यंग्य बाण इन सबसे परे..**